भजन

तर्ज–जब चली ठंडी हवा

अब चली सच की हवा, झूठ से पर्दा उठा
ओ मेरे प्यारे पिया, तुम दिल में आये

1–कृष्ण प्रणामी धर्म ,ये हमारा है नही
धर्म सब तो देह से है, देह से नाता नही
जाना वाणी से खसम, नाता तुमसे है पिया
सम्प्रदा अपनी निजांनद, तुम साथ लाए

2–कृष्ण प्रणामी है यहीं, भूल थी अपनी बड़ी
जाना वाणी से पिया,निजानंदी है हमीं
झूठा नाता ना रहा, सत्य से नाता जुड़ा

3–निसबत हमारी तो, राजश्यामा जी से है
इसमे तो शक ना कोई, रूहों ने जाना ये है
अंग श्यामा जी के हम, वो धनी के आनन्द अंग
पा के हम उनका आनंद, निजानंदी कहलाए

4–प्रणामी तो कृष्ण के, रूहें तो धनी की है
जाना जिसने भेद ये, वो तो अपने पिउ की है
कहनी में कहता है जो, रहनी में करता ना जो
सोच लें अपना गुनाह वो, पिया छल ना पाए